विपरीत मौसम में फलोद्यानों का उचित प्रबन्धन

डॉ. विवेक कुमार त्रिपाठी

उद्यान विज्ञान विभाग

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर-उत्तर प्रदेश

पत्राचारकर्ता : drvktripathicsa@gmail.com

प्रस्तावना

सामान्यतः विभिन्न फलों के नये बगीचे जुलाई-अगस्त माह में सफलतापूर्वक लगाये जाते हैं, जो मौसम की विपरीत परिस्थितियों जैसे सर्दी एवं गर्मी से अतिशीघ्र प्रभावित हो जाते हैं। अतः इन विपरीत परिस्थितियों में इनको बचाना अतिआवश्यक हो जाता है। सर्दियों (दिसम्बर-जनवरी) तथा गर्मियों (अप्रैल से जून) में कम उम्र एवं आकार में भी छोटे पौधे विपरीत परिस्थितियों के प्रति अत्यधिक सहिष्णु रहते हैं। जिनके वातावरण में तापक्रम के कम या अधिक होने पर शीघ्र मृत हो जाने की संभावना अधिक बनी रहती है। अतःइन नवरोपित फल वृक्षों को पाला, गर्म ठंडी हवाओं, कम तथा अधिक तापक्रम आदि कारकों से सुरक्षा करते हुये उनको जीवित रखने के साथ उचित वृद्धि एवं विकास की तरफ ले जाने से ही बागवान भाइयों की मेहनत एवं धन को सुरक्षित किया जा सकता है।

पौधे की उम्र बढ़ने पर विपरीत मौसम के विभिन्न दुष्प्रभावों के साथ-साथ उन पर विभिन्न कीटों एवं रोगों का भी आक्रमण अधिक होने लगता है जिनसे उनकी ससमय उचित सुरक्षा उनके गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन में रहने हेतु अति आवश्यक है।

इसलिए नवरोपित एवं पुराने फलोद्यानों में पौधों की सुरक्षा हेतु नीचे दिए गए विभिन्न तरीकों को अपना कर बागवान भाई बागों की रक्षा एवं सुरक्षा करके उनसे भविष्य में गुणवत्तायुक्त उत्पादन के कारण अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गर्म मौसम का फलोद्यानों पर प्रभावः-

विभिन्न फल पौधों की वातावरण के उच्च तापमान के प्रति अलग-अलग सहनशीलता होती है परन्तु वातावरण में तापमान की वृद्धि के कारण नवरोपित फल वृक्षों की नई पत्तियाँ व शाखायें अधिक गर्मी के कारण झुलस जाती हैं। इन पौधों से वाष्पोत्सर्जन की दर बढ़ जाती है एवं इसके साथ ही पौधों के मुख्य तनों एवं शाखाओं की छाल में भी कभी-कभी चटकन आ जाती है। जिससे पौधों का आकार भी बिगड़ जाता है या पौधा ही मर जाता है। कुछ वर्ष पुराने पौधों के खुले भागों पर जब सूर्य की तीव्र किरणें पड़ती है तो उनमें झुलसन के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। यह प्रभाव पौधे के दक्षिण-पश्चिम दिशा की तरफ के भाग पर अधिक दिखाई पड़ता है। कभी-कभी शाखायें भी क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। इसको घूप झुलसन कहा जाता है।

पुराने पौधों में अत्यधिक घूप से नई शाखायें व विकसित हो रहे फल भी प्रभावित हो जाते हैं। प्रभावित भागों की वृद्धि रूक जाती है। जबकि दूसरी दिशा में पौधे वृद्धि करते रहते हैं। परिणामस्वरूप पौधों का आकार बिगड़ जाता है तथा वह कुरूप हो जाते हैं एवं फलों की गुणवत्ता भी खराब हो जाती है।

गर्म मौसम से बचाव के उपायः-

बड़े फल वृक्षों को गर्म मौसम से बचाने के लिये बगीचे में निम्नलिखित उपाय अपनाये जाने से पौधों की सुरक्षा के साथ उत्पादन भी प्रभावित नहीं होता है।

1. **तनों पर सफेदी की पुताई :** अप्रैल माह में पौधे के मुख्य तने व मोटी शाखाओं पर 25 कि0ग्रा0 बिना बुझा चूना तथा 02 कि0ग्रा0 कापर सल्फेट को 450 लीटर पानी में घोल कर अच्छी तरह से मिलाकर पौधो के तने पर चारों तरफ से पोत देते हैं। जिससे पौधों पर गर्मी का दुष्प्रभाव कम पड़ता है।

2. **तने के आधार को लपेटना :** नये पौधे के तने के निचले भाग को टाट या धान के पुवाल से ढक देते है जिससे सूर्य की किरणें उस पर सीधी नहीं पडती है। इससे पौधों से होने वाली वाष्पोत्सर्जन की क्रिया में भी कमी आ जाती है।

3. **पौधों पर छाजन (Thatching) डालना :** कम उम्र के पौधों को सरकन्डो, सरसों के तनों, गन्नें की पत्तियों या टाट-पट्टियों से इस प्रकार ढक देते हैं कि सूर्य की सीधी किरणें पूरे पौधे पर कम पड़े तथा इससे गर्म हवाओं से भी पौधों का बचाव होता है फलस्वरूप पौधों से उड़ने वाली नमी में कमी आ जाती है।

4. आवश्यक मात्रा में समय से सिंचाई : गर्मी के दिनों में छोटे-छोटे अन्तरालों पर पौधों की सिंचाई करने से गर्मी से बचाव होता है। पौधा अधिक मात्रा में वाष्पोत्सर्जन करता है जिससे उसका तापमान कम हो जाता है। अतः पौधों के आसपास हल्की सिंचाई करके नमी को बनाये रखना लाभदायक रहताहै।

5. वायु प्रतिरोधक पट्टियों का रोपण : वायु प्रतिरोधक पट्टियों के लगाने से उत्तरी भारत के मैदानों में उत्तर-पश्चिम की ओर से चलने वाली गर्म हवाओं का सीधा प्रभाव बगीचे के पौधों पर कम पड़ता है परिणामस्वरूप बगीचे से नमी कम उड़ती है। जिससे ये गर्म हवायें नये पौधों को कम हानि पहुँचाती है। यह पट्टी आंधी एवं तूफान से भी नये व पुराने वृक्षों की रक्षा पट्टिका में रोपित पौधों की लंबाई की ढाई गुना दूरी तक करता है।

शरद ऋतु का पौधों पर प्रभाव :

शरद ऋतु में नये रोपित व विकसित हो रहे पौधों पर पाला आदि कारकों का हानिकारक प्रभाव पड़ने से पौधों की मृत्यु हो जाती है। बसन्त ऋतु के प्रारम्भ में तापमान के कम होने से या पाले के कारण शाखाओं एवं टहनियों की छाल एवं केम्बियम बद रंग हो कर मर जाती है या वह सामान्य वृद्धि नहीं कर पाती है। ज्यादा पाला पड़ने की दशा में तना या शाखा की सम्पूर्ण लम्बाई में छाल चटक जाती है और उसमें कवक का विकास होने से पौधा मर जाता है। अतः इस समय पौधो को कम तापमान से बचाना अतिआवश्यक होता है।

शरद ऋतु में पौधों की देखभाल :

1. नये पौधों को तीन दिशाओं से टाट से ढंकना: नये पौधों में 20-25 सेंमी0 की दूरी पर त्रिभुजाकार या चर्तुभुजाकार रूप में पौधो की लम्बाई से 15-20 सेंमी0 बड़ी तथा 3 या 4 लकड़ियों को लगाकर पूर्व की दिशा में खुला रखते हुए शेष तीन दिशाओं से जूट का बना बोरा या टाट लगा देते हैं, जिससे पौधो के आसपास का तापमान बाहर की तुलना में अधिक रहने से पौधों पर शीत का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है और वह वृद्धि की अवस्था में बने रहते है।

2. पौधों के तनों को ढंकना : बगीचे में नये पौधो के तनों को चारों तरफ से टाट से लपेटकर ढकने से भी पौधो के ऊपर शीत ऋतु में कम तापक्रम का दुष्प्रभाव नहीं या बहुत कम पड़ता है और पौधो मरने से बच जाते हैं।

3. पौधों के तनों के पास भूमि पर चारों तरफ पलवार बिछाना : सर्दियों में पौधों के तनों के आसपास की भूमि एवं बगीचे में घास-फूस, पुआल, पत्तों या अन्य पदार्थ की पलवार बिछा देने से पौधो के आसपास एवं बगीचे का तापक्रम कम नहीं होने पाता है और पौधा सर्दी में कम तापक्रम के कारण मरने से बच जाता है।

4. बगीचे के बाहर वायु अवरोधी पौधों को लगाना : बगीचे के उत्तर एवं पश्चिम दिशा में वायु अवरोधी पौधो जैसे- नीम, शीशम, देशी आम, जंगली जलेबी आदि को एक वायु अवरोधी पंक्ति के रूप में रोपित कर देने से कम तापक्रम से होने वाली क्षति से पौधों की सुरक्षा काफी हद तक सुनिश्चित की जा सकती है।

5. उचित समय एवं उचित अंतराल पर सिंचाई : नये लगाये गये पौधो कम उम्र के एवं मुलायम होने के कारण उनमें हल्की मात्रा में एवं नियमित अंतराल पर सिंचाई करना अति आवश्यक होने के साथ-साथ अत्यंत लाभदायक रहता है। इसका लाभ यह भी रहता है कि शीतकाल में पौधो के अंदर का उपस्थित जीव द्रव्य जमने नहीं पाता और पौधा मरने से बच जाने के साथ वृद्धि एवं विकास की अवस्था में बना रहता है।

सदाबहार वृक्ष जैसे-आम, अमरूद, किन्नों, चीकू, जामुन, आदि फलकम या अधिक तापक्रम के प्रति अधिक सहनशील होते है इसलिए इनका रोपण अधिक क्षेत्रफल में करना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विभिन्न विधियों को अपना कर बागवान भाई मौसम की विपरीत परिस्थितियों में अपने फलोद्यान की रक्षा कर सकते हैं और धान एवं समय की क्षति को बचाते हुए भविष्य में अधिक गुणवत्ता युक्त उत्पादन प्राप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

❖❖